International Journal of Research
*Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers*
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

# एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति

**बृजेश कुमार सिंह**
**शोधच्छात्र (संस्कृत विभाग)**
**इलाहाबाद विश्वविद्यालय,**
**इलाहाबाद**

भारतीय संस्कृति और दर्शन की अनेक विशेषताओं में एक प्रमुख विशेषता अनेकता में एकता और एकता में अनेकता है। इसका सर्वोत्कृष्ट उदाहरण भारतीय षड्दर्शन (न्याय–वैशेषिक, सांख्य–योग, मीमांसा और वेदान्त) है। जो परस्पर बिल्कुल भिन्न होते हुए भी वेद को प्रमाण मानकर प्रवृत्त होते हैं। भारतीय संस्कृति समन्वयमूलक है यहाँ चिन्तन, तर्क और धारणा की स्वतंत्रता है। प्रत्येक व्यक्ति स्वमान्यतानुसार जीवन जी सकता है और तद्नुसार किसी भी सम्प्रदाय के अन्तर्गत उपासना कर सकता है। इस विशेषता का श्रेय भारतीय संस्कृति के मूल आधार स्तम्भ वेद और वैदिक साहित्य को जाता है। वेद विश्व का वह प्राचीनतम ज्ञान कोश है, जिससे विश्व के अधिकांश दर्शन और सम्प्रदाय निसृत हुये आज भले ही देशकाल के परिस्थितिनुसार उनका स्वरूप कुछ मान्यताएँ वेद से सर्वथा भिन्न और अलग हो गयीं हो, पर उनके मूल में कहीं न कहीं वेद से कुछ साम्य अवश्य विद्यमान हैं। कुछ ऐसे तत्त्व भी हैं जो वैदिक मान्यताओं और वैदिक दर्शनों में पाए जाते हैं। उदाहरणतः ईसाई और इस्लाम सम्प्रदायों में एकेश्वर वाद को आधार बनाया गया है। कुरानशरीफ में कहा गया है कि ''सफ तारीफ अल्लाह के लिये है जो सारे जहाँ का मालिक है। वह अल्लाह एक है.....और बेनियाज है और..... कोई उसके

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

बराबर का नहीं है।[1] सिक्ख पन्थ में भी कहा गया है कि वह परमात्मा एक है जो कालबाधित तथा सार्वकालिक है, सत् है और सम्पूर्ण सृष्टि को बनाने वाला है ऊँकार उसका स्वरूप है जैन पन्थ में भी उसको णमोंकार कहकर नमस्कार किया गया है। वेद की अपनी एक विशेषता एकेश्वरवाद में बहुदेवतावाद और बहुदेवताओं में एकेश्वर वाद है। जहाँ सम्पूर्ण देवता मिलकर के उसी एक अविनाशी तत्त्व का स्वरूप है और वह अविनाशी तत्त्व देश–कालादि से परे सार्वकालिक, सार्वभौमिक, सर्वव्यापी अनन्त, अखण्ड सत् चित् आनन्दमय है, और भारतीय दर्शन उसे ब्रह्म की संज्ञा से अभिहित करता है। वह ब्रह्म निर्गुण, निराकर, निर्विकार भी है तथा सगुण साकार भी है सम्पूर्ण सृष्टि उसी का व्यक्त रूप है। ब्रह्म ही समस्त सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति तथा लय का कारण है आधार है और सम्पूर्ण सृष्टि उसी में लय हो जाती है इसी को ब्रह्मसूत्र में **जन्माद्यस्य यतः**[2] कहकर के व्याख्यायित किया है। वेदों में इसको ज्येष्ठ ब्रह्म, पुरुष, उच्छिष्ट, स्कम्भ आदि नामों से व्याख्यायित किया गया है।

स्कम्भ इस विशाल ब्रह्माण्ड व भुवन कोशरूपी महाभवन का जो मुख्य आधार स्तम्भ है, वह ब्रह्म प्रजापति हिरण्यगर्भ आदि का भी आदिभूत है। अतएव इसे ज्येष्ठ ब्रह्म के नाम से पुकारा गया है।

यह समस्त विश्व में समाया हुआ है और समस्त विश्व इसमें समाया हुआ है और यह समस्त विश्व में ओत–प्रोत है। विराट् इसी में स्थित है। सम्पूर्ण देवता इसी के अंगभूत है। यही सबके जीवन का मूलाधार है।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

**यत्रलोकांश्च कोशांश्चापो ब्रह्म जना विदुः।**
**असच्च यत्र सच्चान्तः स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विेदव सः।**[3]

परमानन्द स्वरूप जिस परमात्मा से इस जगत की उत्पत्ति होती है, और सम्पूर्ण जगत् को व्याप्त करके स्थित है। सर्वज्ञ, शक्तिमान एक ही उस सत्ता को जगत् का परमकारण स्वीकार किया गया है।

**यदेजति पतति यच्च तिष्ठति प्राणद् प्राणन्निमिषच्च यद् भुवत**

**तद् दाधार पृथिवीं विश्वरूपं तत् संभूय भवत्येकमेव।।**[4]

इसी भाव को श्रीमद्भगवद्गीता में अभिव्यक्त करते हुए कहा गया है– मैं सम्पूर्ण जगत को उत्पन्न करने वाला और लय करने वाला अर्थात् मूल कारण हूँ। वह परब्रह्म परमात्मा ही जगत् की उत्पत्ति का कारण है उसी में सब जगत् चेष्टा करता है और वह अनेक धर्म होते हुए भी एकरूप है।

अन्यत्र सब कुछ लय होने के बाद शेष रहने वाला परब्रह्म को उच्छिष्ट[5] शब्द से अभिव्यक्त करते हुए कहा गया है जिसमें नामरूपात्मक यह जगत शुक्ति में रजत की भाँति आहित अर्थात् आरोपित है। उच्छिष्ट में नाम और रूप स्थित है, उच्छिष्ट में लोक स्थित, इन्द्र और अग्नि दोनों उच्छिष्ट में स्थित है, सब कुछ उच्छिष्ट के अन्दर समाया हुआ है।[6]

इस उच्छिष्ट रूप परमसत्ता से ही देव पितर मनुष्य, गन्धर्व अप्सरा आदि उत्पन्न हुये हैं।[7] जो कुछ प्राणवान (जंगम), अप्राणवान (स्थावर) वह सब उसी में है वह सर्वदृष्टा। सारे देवता उसमें मिलकर एकाकार हो जाते हैं।[8]

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

वह परब्रह्म सम्पूर्ण सृष्टि को व्याप्त करके स्थित है, वही मृत्यु है, वही अमृत है, वही अजन्मा है, वही राक्षस है। वह रुद्र है, वह ही धनों का संविभाग करने वाला अग्नि है। धनादि के दान करने के समय देवों तथा पूज्यमानों को नमस्कारादि काल में वह नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, वषट्, वौषट् आदि शब्दों द्वारा समीप ही उपस्थित किया जाता है। उसके आदेश को सब गतिमान जंगम प्राणी शिरोधार्य करते हैं।[9] कहने का तात्पर्य यह है कि वह परमात्मा केवल अग्नि आदि पदार्थों को उत्पन्न नहीं करता, किन्तु स्वयं ही तद्रूप में परिणत हो जाता है। भाव यह है कि वह एक परब्रह्म ही कार्यकरण रूप में होकर विविध लीला करता है। वही कार्य है वही कारण भी। इसलिए श्रीमद्भागवत् आदि पुराणों में उसे कारणंकरणं कर्त्ता विकर्त्ता गहनों गुहः कहते हुए समस्त सृष्टि का मूल बताया है। इसी को वेदान्त दर्शन ''सर्वखल्विदंब्रह्म'' कहकर अभिव्यक्त करता है।

उस परमसत्ता परमात्मा से यह सब जगत जल से हिम के सदृश परिपूर्ण है और सब भूत उसके अन्तर्गत संकल्प के आधार स्थित है।[10] वह परमानन्द स्वरूप परमात्मा सम्पूर्ण जगत् को व्याप्त करके स्थित है, सब भूतों की उत्पत्ति का कारण वह ही है क्योंकि ऐसा चर और अचर कोई भी भूत नहीं है, जो उस परब्रह्म से रहित हो।[11]

वह परमसत्ता ब्रह्म ही समस्त संसार का एकाकार है। वही परब्रह्म हमारा पालन–पोषण करने वाला है, जन्मदाता भी वही है, वही हमारा बन्धु है। वह

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

सम्पूर्ण प्राणियों और उनके लोकों के नामों को वह जन्मों को जानता है, वह अकेला ही इन्द्र, अग्नि, वरुणादि देवताओं के नामों को धारण करने वाला है। सम्पूर्ण विश्व के ज्ञान का लक्ष्य (ज्ञेय) वही एक है अर्थात् सम्पूर्ण विश्व के जितने भी दर्शन, धर्म, सम्प्रदाय हैं उनका जिज्ञास्य विषय या जिज्ञासा केन्द्र वह एक मात्र ब्रह्म है।[12] अलग–अलग दर्शन और सम्प्रदायों में उसको अलग–अलग नामों से अभिहित किया गया है। इसका समर्थन अथर्ववेद के एक अन्य मंत्र से भी होता है। यहाँ कहा गया है कि वह परमसत्ता ब्रह्म ही इन्द्र, मित्र, वरुण और अग्नि नामों से अभिहित किया जाता है और वही 'द्यु' में विचरण करने वाला शोभन पंखों वाला गरुड़ है। उसी एक सत् को विद्वान अनेक प्रकार से अभिव्यक्त करते हैं। अग्नि, यम और मातरिश्वावायु उसी के नाम हैं।[13]

महर्षि यास्क ने भी इसी भाव को व्यक्त करते हुए निरुक्त में कहा है–

**महाभाग्याद् देवताया एक आत्मा बहुधा स्तूयते।14**

जहाँ वेद सम्पूर्ण सृष्टि के स्वरूप को ब्रह्म को स्वरूप बताता है। वहीं सम्पूर्ण सृष्टि को ब्रह्म में अवस्थित बताया गया है। सम्पूर्ण देवता भौतिक सृष्टि उस परब्रह्म का विराट् स्वरूप है अर्थात् सम्पूर्ण सृष्टि उसके अंग–स्वरूप है और वह एकमात्र अंगी। जिस परब्रह्म को शरीर में सारे तैंतीस देवता (अष्ट वसु, एकादश रूद्र, द्वादश आदित्य और अश्विनद्वय) एकत्रित हैं।[15] भूमि जिस परब्रह्म का प्रमापक अर्थात् पाँव है और अन्तरिक्ष उदर है 'द्यु' जिसका सिर है वह ज्येष्ठ श्रेष्ठ ब्रह्म है।[16]

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

इस प्रकार सम्पूर्ण विवेचन से यह स्पष्टतया सिद्ध होता है कि वेद तथा वेद साहित्य में वर्णित परमसत्ता ''ब्रह्म'' ही सम्पूर्ण सृष्टि का उपादान कारण है, निमित्त कारण है समवायी कारण है वही एकमात्र कारण भी है और कार्य भी है और कारक भी। वही एक समस्त सृष्टि के रूप में अभिभाषित हो रहा है। इसी को उपनिषदों में सर्व खल्विदंब्रह्म[17] और ईशावस्यामिदं सर्वं यत्किञ्चित जगत्यां जगत्[18] कहकर अभिव्यक्त किया गया है। व्यक्त स्वरूप में समस्त सृष्टि उसके अंग हैं।

## सन्दर्भ

1. पवित्र कुरान– हिन्दी अनुवाद– शूरह 1/4
2. ब्रह्मसूत्र–1/1/2
3. अथर्ववेद संहिता 10/7/10
4. अथर्ववेद 10/7/11
5. अथर्ववेद 11/7/10 सर्वस्मद् उर्ध्व अवशिष्यते इति उच्छिष्ट
6. अथर्ववेद 11/7/1

   उच्छिष्टे नाम रूपं चोच्छिष्टे लोक आहितः

   उच्छिष्टे इन्द्रश्चाग्निश्च विश्वमन्तः समाहितम्।

   उच्छिष्टे द्यावा पृथिवी विश्वं भूतं समाहितम्
7. अथर्ववेद 11/7/27

   देवाः पितो मनुष्या गन्धर्वाप्सरसश्च ये

   उच्छिष्टाज्जज्ञिरे सर्वे दिवि देवा दिविश्रितः।।
8. अथर्ववेद–13/4/11, 12, 13

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

स प्रजाभ्यो वि पश्यतियच्चं प्राणाति यच्च न
तमिदं निगतं सह स एक एक वृदेक एवं
एते अस्मिन् देवा एकवृतो भवन्ति।

9. अथर्ववेद 13/4/25
स एव मृत्यु सोऽमृतं सोऽभ्यं स रक्षः
स रुद्रो वसुवर्निवसुदेय नमोवाक वषट् कारोऽनुसंहितः
तस्येमे सर्वे यातव उप प्रशिषमासते।

10. वही, 13/4/27
मया ततमिदं सर्वं जगदव्यक्तमूत्तिना।
मत्स्थानि सर्वभूतानि न चाहं तेष्ववस्थितः।

11. गीता, 10/39
यच्चापि सर्वभूतानां बीज तहमर्जुन
न तदस्ति विना यत्स्यान्मया भूतं चराचरम्।।

12. अथर्ववेद
स नः पिता जनिता स उत बन्धुर्धामनि वेद भुवनानि विश्वा
यो देवानां नामध एक एव तं स प्रश्नं भुवना यत्तिसर्वा

13. अथर्ववेद 9/10/28
इन्द्रं मित्रं वरुणामग्नि माहुरथो दिव्यः स सुपर्णे गरुत्मान्
एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्त्यग्नि यम मातरिश्वानमाहु।

14. निरुक्त 7/2

15 अथर्ववेद 10/7/13
यस्य त्रयस्त्रिंशद देवा अङ्गे सर्वे समाहित।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

स्कम्भं त ब्रूहि कतमः स्विदेव सः।

16. अथर्ववेद 10/7/32

यस्य भूमिः प्रमान्तरिक्षमुतोदरम् दिवंयश्चक्रे मूर्धानं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः।

17. छान्दोग्योपनिषद् 3/1/41

18 ईशावास्योपनिषद् 1/1